

गोसावीनंदनकृत आरती (हिंदी)

शेंदूर लाल चढायो अच्छा गजमुखको | दोंदिल लाल बिराजे सुत गौरीहरको ॥

हात लिये गुडलड्डू सांई सुरवरको | महिमा कहे न जाय लागत हूं पदको ॥१॥

जय जय जी गणराज विद्यासुखदाता | धन्य तुम्हारा दर्शन मेरा मन रमता ॥ध्रु०॥

अष्टौ सिद्धी दासी संकटको बैरी | विघ्नविनाशक मंगल मूरत अधिकारी ॥

कोटीसूरजप्रकाश ऐसी छबि तेरी | गंडस्थलमदमस्तक झूले शशिवहारी ॥जय०॥२॥

भावभगतिसे कोई शरणागत आवे | संतत संपत सबही भरपूर पावे ॥

ऐसे तुम महाराज मोको अति भावे | गोसावीनंदन निशिदिन गुण गावे ॥जय०॥३॥